सामुदायिक सहभागिता

INNOVATION CODE - JHK/18/01

विद्यालय–समाज और शिक्षा के बीच महत्वपूर्ण कड़ी है। जब ज्ञान, मूल्यों और सिद्धांतों का प्रकाश विद्यालय की चार दीवारी से बाहर समुदाय तक पहुंचता है, तब समाज शिक्षा के वास्तविक महत्व– प्रगति और खुशहाली– को समझने एवं स्वीकार करने में सक्षम बनता है। जागरूक समुदाय दायित्व पूरा करता है कि उसके बच्चे पढ़े– बढ़ें और सशक्त नागरिक बनें। कक्षा में शिक्षक अपने स्तर पर चाहे कितने ही प्रयास क्यों न कर लें, लेकिन जब तक समुदाय साथ नहीं देता, तब तक कम नामांकन दर, कक्षा अनुपस्थिति और विद्यालय में कम ठहराव जैसी प्रमुख समस्याओं का समाधान संभव नहीं है। अक्सर देखा गया है कि कम शिक्षित या अशिक्षित अभिभावकों के मन में शिक्षा और विद्यालय के प्रति उदासीनता है। उनके मन में अपने बच्चों को विद्यालय भेजने को लेकर कोई रूझान नहीं होता। लेकिन सामुदायिक सहभागिता नवाचार के माध्यम से इस दृष्टिकोण को बदला जा सकता है। समुदाय और विद्यालय के बीच विश्वास का रिश्ता मजबूत करने में सामुदायिक सहभागिता नवाचार का विशेष स्थान है।

नवाचारी शिक्षकों के नाम

1. अमाद उद्दिन राग़िब, उत्क्रमित उ० वि० अमलाबाद, बोकारो
2. रवीन्द्र प्रसाद राय, राजकीय मध्य विद्यालय हाथीगढ़, साहेबगंज
3. अमर कुमार, राजकीय प्राथमिक विद्यालय टोंगासकेला, खूंटी
4. बबलू कुमार वर्मा, राजकीय प्राथमिक विद्यालय मेदनी, रांची
5. त्रिदेव मांझी, राजकीय प्राथमिक विद्यालय मेदनी, रांची
6. सतेन्द्र कुमार सिंह, उत्क्रमित मध्य विद्यालय कुरुम, रामगढ़
7. अरुण कुमार सिंह, राजकीय उत्क्रमित उच्च विद्यालय सिकरियाटांड़, सिमडेगा

नवाचार के लाभ

- समुदाय और विद्यालय में परस्पर सहयोग की भावना जाग्रत होती है।
- दोनों एक दूसरे के पूरक बनते हुए, शैक्षिक एवं सामाजिक समस्याओं का समाधान ढूंढने की ओर अग्रसर होते हैं।
- नामांकन दर और छात्रों के ठहराव में सुधार होता है। । साथ ही, विद्यालय के भीतर और बाहर सकारात्मक परिवर्तन का निर्माण संभव है।
- सुव्यवस्थित विद्यालय प्रबंधन एवं अनुशासित वातावरण का सृजन होता है।
- बच्चों के अधिगम स्तर में वृद्धि तथा एक सुसंस्कृत समाज का निर्माण होता है।

प्रभाव क्षेत्र : विद्यालय में अभिभावकों/सामुदायिक सहभागिता में वृद्धि

नवाचार का सार

इस नवाचार में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से विद्यालय और समुदाय के बीच सामंजस्य स्थापित करने और परस्पर विकास पर बल दिया गया है। इनके क्रियान्वयन के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने की आवश्यकता है। इनसे शैक्षिक और सामाजिक वातावरण विकसित होता है। किसी भी गतिविधि के क्रियान्वयन के लिए विशेष टी.एल. एम की आवश्यकता नहीं है।

विभिन्न गतिविधियां

1. विद्यालय और समुदाय एक्शन ग्रुप

संक्षिप्त परिचयः विद्यालय समुदाय के दृष्टिकोण, मूल्यों और व्यवहार का प्रतिबिम्ब है। जहां समुदाय को जागरूक और सजग बनाना और भावी युवा पीढ़ी तैयार करना विद्यालय का दायित्व है। वहीं समुदाय की भी जिम्मेदारी है कि वह विद्यालय में बेहतर शैक्षिक वातावरण स्थापित करने में सहयोग करे।

विद्यालय– समुदाय 'एक्शन ग्रुप' गतिविधि का सार भी यही है। यह गतिविधि समुदाय और विद्यालय की परस्पर निर्भरता पर आधारित है, और किस प्रकार विद्यालय और समुदाय अपनी– अपनी परेशानियों का हल निकाल सकते हैं।

विद्यालय/कक्षा में संप्रयोगः इससे विद्यालय के समक्ष आने वाली किसी भी खास समस्या का समाधान निकाला जा सकता है। विद्यालय का स्थानीय लोगों के साथ आत्मीय लगाव बढ़ता है। छात्रों में ज्ञान और आत्मविश्वास बढ़ता है। यह प्रारंभिक और प्राथमिक कक्षाओं में प्रभावशाली है। विद्यालय इस गतिविधि को अपनी आवश्यतानुसार ढाल कर माध्यमिक विद्यालय की जरूरतें भी पूरी कर सकते हैं।

योजनाः समुदाय के सदस्यों के साथ मिलकर 'एक्शन ग्रुप' बनाने से पूर्व विद्यालय और समुदाय के समक्ष आ रही समस्याओं को चिन्हित करना आवश्यक है। उसके बाद समुदाय के उन लोगों से संपर्क किया जाता है, जो समस्या का निदान कर सकते हैं। इसके अंतर्गत अलग–अलग समूहों का गठन किया जाता है।

जैसे कि–

आम सभा समूह– इस का उद्देश्य मुख्यतः विद्यालय और समुदाय के विकास से जुड़े विषयों पर चर्चा करना और उनका हल ढूंढना है। स्थानीय डॉक्टर, पुलिस अधिकारी, गांव के सरपंच, अन्य विद्यालयों के शिक्षक और समुदाय के विशिष्ट लोग इस समूह का हिस्सा बनते हैं।

सह–शैक्षिक सहयोग समूह– इस ग्रुप का उद्देश्य छात्रों के बीच पाठ्यक्रम के अतिरिक्त सह–शैक्षिक गतिविधियों को बढ़ावा देना है। विद्यालय प्रबंधन समिति, संचालन समिति और समुदाय से विशिष्ट लोग इस ग्रुप का हिस्सा बनते हैं, जिन्हें किसी विशेष कला जैस कि संगीत, नृत्य, कला–शिल्प, चित्रकारी, योग इत्यादि का ज्ञान हो।

स्वैच्छा समूह– इस समूह का हिस्सा वह लोग बनते हैं, जो स्वेच्छा से विद्यालय और समुदाय के लिए कार्य करना चाहते हैं। इसके लिए विद्यालय अपनी तरफ से समुदाय के लोगों को स्वेच्छा से नामांकित करने के लिए पत्र भेज सकता है। जो लोग अनुकूल प्रतिक्रिया देते हैं, उनकी सूची तैयार करके विद्यालय उनसे समस्या के सामाधान हेतु संपर्क करता है।

ध्यान दें– विद्यालय नामांकन पत्र में ही यह स्पष्ट कर दे कि सहयोग के लिए समुदाय के किसी भी व्यक्ति को कोई शुल्क नहीं दिया जाएगा एवं उनकी सेवाओं का लाभ लेने के लिए आवश्यकतानुसार विद्यालय उनसे संपर्क करेगा। सहयोग निःशुल्क होगा एवं अतिरिक्त समय में विशेष अवसर पर ही लिया जाएगा।

क्रियान्वयनः इस गतिविधि का क्रियान्वयन समस्या और समाधान के आधार पर किया जा सकता है। इसके द्वारा छात्रों के टीकाकरण, पोषण, स्वास्थ्य और स्वच्छता के साथ–साथ सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ उठाने के लिए एक्शन ग्रुप कार्य कर सकते हैं। विस्तार से समझने के लिए कुछ समस्याएं और समाधान के उदाहरण प्रस्तुत हैं।

(पहला) किस प्रकार आंगनबाड़ी में पढ़ रहे बच्चों का प्राथमिक विद्यालय में 100% नामांकन सुनिश्चित किया जा सकता है?

समस्या – सरकारी योजना के तहत बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा की व्यवस्था आँगनबाड़ी में होती है। यहां पर बच्चों को घर जैसा वातावरण मिलता है और वह खेल–खेल में अक्षरों का ज्ञान, बोलना, स्वयं भोजन करना सीखते

हैं। इससे वह घर से कुछ समय के लिए दूर रहने के अभ्यस्त भी हो जाते हैं, जिससे बाद में उन्हें विद्यालय के वातावरण में समय व्यतीत करना सहज लगने लगता है। अक्सर देखा गया है कि आंगनबाड़ी से निकलकर बच्चों का मन विद्यालय में नहीं लगता। नए शिक्षक/शिक्षिका के साथ उन्हें संकोच महसूस होता है। यही समस्या प्राथमिक विद्यालय से माध्यमिक विद्यालय में उत्तीर्ण हो रहे छात्रों के समक्ष भी आती है। वह भी नए शिक्षकों के साथ तालमेल बिठाने में संकोच महसूस करते हैं।

समाधान– यदि गांव के प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक या शिक्षिका आंगनबाड़ी में ही बच्चों से समय–समय पर मिलते/मिलती रहें तो बच्चे विद्यालय के वातावरण में सहजता से रमने लगते हैं।

इसी तरह के प्रयास यदि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक भी करें, तो प्राथमिक विद्यालय के छात्र बड़ी कक्षा में जाकर नए वातावरण को सरलता से स्वीकार कर लेते हैं। इन कोशिशों से प्रत्येक स्तर पर छात्रों का नामांकन दर न सिर्फ स्थाई बल्कि ऊंचा बना रहता है।

(दूसरा) किस प्रकार अभिभावकों को सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम जैसे कि टीकाकरण या पेट के कीड़े मारने के लिए बच्चों को दवा देने जैसे कार्यों के लिए प्रेरित किया जाए?

समस्या– विद्यालय में समय–समय पर स्वास्थ्य कार्यक्रम चलाये जाते हैं। जिनके तहत शिक्षक बच्चों को आयरन की गोलियां, पेट के कीड़े मारने की दवा (अल्बेन्डाजोल एवं फाईलेरिया) इत्यादि की गोलियां देते हैं। लेकिन देखा गया कि जानकारी और जागरूकता के अभाव में अक्सर अभिभावक बच्चों को इन गोलियों को खाने से रोकते हैं। इसका दुष्प्रभाव बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ता है।

सामधान– ए.एन.एम दीदी (सहायक नर्स मिडवाइफ) विद्यालय में आकर अभिभावकों को संबोधित करती हैं। जब वह अभिभावकों को टीकाकरण एवं विभिन्न गोलियों के महत्व के बारे में समझाती हैं, तो इसका सकारात्मक प्रभाव अभिभावकों पर अधिक होता है और वह भी सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं का लाभ प्राप्त करती हैं।

(तीसरा) किस प्रकार विद्यालय समुदाय और छात्रों में नैतिक मूल्यों और अधिकारों का संचार करने का केंद्र बन सकता है?

समस्या– अक्सर देखा गया है कि ग्रामीण परिवेश में अभिभावक खेती या मजदूरी करने में जीवन व्यतीत कर देते हैं। उनकी शिक्षा के लिए उदासीनता बच्चों के भविष्य को भी खाली कर देती है। विद्यालय उन बच्चों के घर के वातावरण में किस प्रकार सकारात्मक प्रभाव लाए और कैसे छात्रों को संसाधनों की कमी के बीच उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रेरित करे यह एक चुनौती है।

समाधान– विद्यालय समुदाय से ऐसे लोगों को आमंत्रित कर सकता है, जो सीमित संसाधनों के बीच अपनी मेहनत और दृढ़ इच्छा से जीवन में सफल हुए हैं। स्थानीय डॉक्टर, प्रोफेसर, सेवानिवृत अधिकारी अपने अनुभवों से छात्रों को न सिर्फ प्रेरणा दे सकते हैं बल्कि उन्हें विभिन्न व्यवसायों और नौकरियों के बारे में जानकारी भी दे सकते हैं। यह सरल प्रयास छात्रों के उदासीन दृष्टिकोण को बदलने में कारगर हो सकता है।

2. बात मान वरना हम तेरे मेहमान

संक्षिप्त परिचयः छात्रों का शैक्षिक स्तर सुधारने के लिए शिक्षक चाहे कितने ही प्रयास क्यों न कर लें, लेकिन जब तक कक्षा उपस्थिति में सुधार नहीं होगा, तब तक इच्छित परिणाम मिलना मुश्किल है। 'बात मान वरना हम तेरे मेहमान' गतिविधि एक सरल हल प्रस्तुत करती है। इसमें शिक्षक समुदाय के सदस्यों के साथ मिलकर कक्षा में अनुपस्थित रहने वाले छात्र के घर जाते हैं और खुशनुमा–मजाकिया माहौल में परिवार के साथ चाय पीते हैं। वहां वह छात्र को अभिभावक के समक्ष मीठी डांट भी लगाते हैं और अभिभावकों से कहते हैं कि यदि उन्होंने अपने बच्चे को नियमित विद्यालय नहीं भेजा, तो समुदाय के लोग

और शिक्षकगण उनके घर खाने पर आएंगे। अभिभावक शिक्षक का तात्पर्य समझ जाते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि उनका बच्चा प्रतिदिन विद्यालय जाए।

विद्यालय/कक्षा में संप्रयोगः इस गतिविधि से कक्षा उपस्थिति में सुधार आता है। जिसका प्रभाव बेहतर शैक्षिक परिणामों में दिखता है। अभिभावक भी अपने बच्चे को नियमित रूप से विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित होते हैं।

योजनाः शिक्षक उन छात्रों की सूची तैयार करें, जो कक्षा से सबसे अधिक अनुपस्थित रहते हैं। इन छात्रों की सूची उनके नाम, पते और अन्य विवरण के साथ विद्यालय प्रबंधन और गांव के प्रधान के साथ साझा करें और उन्हें इस गतिविधि के उद्देश्य से अवगत कराएं। इसके बाद इन लोगों से अनुपस्थिति छात्रों के घर जाने का निवेदन करें। अनुपस्थित रहने वाले सभी छात्रों के घर एक ही दिन जाकर मिलना संभव न हो, तो क्रमानुसार दिन बांट सकते हैं।

क्रियान्वयनः

- शिक्षक निर्धारित समय और तिथि पर समूह बनाकर अनुपस्थित रहने वाले छात्र के घर जाते हैं और हंसी–मजाक करते हुए अभिभावकों से चाय पिलाने के लिए कहते हैं।
- घर पर शिक्षक समेत समुदाय के सदस्यों को देखकर अभिभावक आदर, सम्मान के साथ चाय तो पिलाते ही हैं, साथ ही उन्हें इस बात का आभास भी हो जाता है कि उनके बच्चे का विद्यालय न जाना गंभीर विषय है और वह बच्चे को नियमित रूप से विद्यालय भेजने लगते हैं। शिक्षक छात्र को भी प्यार से और हल्की डांट से विद्यालय आने का आदेश देते हैं।
- अभिभावकों और समुदाय की उपस्थिति में पड़ी मीठी डांट का असर छात्र पर पड़ता है और उसके मन में भी दायित्व बोध जागने लगता है।
- इसी बीच शिक्षक छात्र के घर पर पढ़ने की जगह का मुआयना भी करते हैं और अभिभावकों को आवश्यक सुझाव भी देते हैं। जैसे कि यदि बच्चे के पढ़ने के स्थान पर प्रकाश की कमी हो तो अभिभावकों को बल्ब इत्यादि लगाने के लिए कहते हैं।
- शिक्षक अभिभावकों को अपने बच्चे की पढ़ाई पर ध्यान देने और सुबह–शाम उसके पढ़ने का समय निर्धारित करने का आग्रह भी कर सकते हैं।

ध्यान दें: शिक्षक यह गतिविधि साप्ताहिक या हर 15 दिन में एक बार सभी के सहयोग से कर सकते हैं। शिक्षक यदि चाहें तो इस भ्रमण के बारे में पहले से ही अभिभावकों को सूचित कर सकते हैं, ताकि बच्चा और उसके माता–पिता घर पर ही उपस्थित रहें।

3. बाल शिकायत पेटी

संक्षिप्त परिचयः छात्र जितना समय विद्यालय में व्यतीत करते हैं, उससे कहीं अधिक समय घर पर, आसपड़ोस में लोगों, व्यवहारों और माहौल को देखने, सुनने और समझने में बिताते हैं। बच्चों के आसपास घटित हो रही हर अच्छी–बुरी घटना, जिसका असर उनके विद्यालय, शिक्षा या शैक्षिक वातावरण पर पड़ता छात्रों को प्रभावित करती है। समाज से कुरीतियों को समाप्त करके छात्रों को स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण प्रदान करना विद्यालय और समुदाय का दायित्व है जिसमें 'बाल शिकायत पेटी' गतिविधि अहम भूमिका निभा सकती है। इसमें छात्र अपने आसपास होने वाली कुरीतियों या समस्याओं को एक शिकायत पेटी में डाल सकते हैं, जिसका संज्ञान शिक्षक और विद्यालय प्रबंधन लेते हैं।

विद्यालय/कक्षा में संप्रयोगः छात्र अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनते हैं। उनके भीतर समस्याओं का सामना करने, समाधान ढूंढने और नेतृत्व करने की क्षमता आती है। विद्यालय और समुदाय में स्वच्छ –सुरक्षित वातावरण उन्हें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

योजनाः इससे पहले कि बाल शिकायत पेटी गतिविधि का क्रियान्वयन विद्यालय में किया जाए, आवश्यक है कि शिक्षक छात्रों को एक अच्छे नागरिक के गुणों और

जिम्मेदारियों से अवगत कराएं।

शिक्षक छात्रों को बाल मजदूरी, बाल विवाह, या उनके साथ होने वाले किसी भी प्रकार के दुर्व्यवहार के बारे में जानकारी दे सकते हैं। साथ ही शिक्षक छात्रों को सामाजिक समस्याओं जैसे कि सड़क में गड्ढे होने या जलभराव के कारण रास्ता बंद होने जैसी परेशानियों के बारे में जागरूक कर सकते हैं।

विधिः शिकायत पेटी बनाने के लिए किसी भी खाली गत्ते के डिब्बे का इस्तेमाल किया जा सकता है। वह अपनी रचनात्मकता के अनुसार इस पेटी को सजा भी सकते हैं। शिक्षक यह कार्य छात्रों से करवा सकते हैं।

क्रियान्वयनः

- शिकायत पेटी को प्रधानाचार्य के कक्ष के पास बरामदे में रख सकते हैं।
- छात्र अपनी शिकायत को पर्ची पर लिखकर शिकायत पेटी में डाल सकते हैं
- शिकायत पेटी को प्रतिदिन स्कूल खत्म होने से कुछ समय पूर्व, शिक्षकों और छात्रों की उपस्थिति में, प्रधानाचार्य सभी खोल कर, शिकायतों को पढ़ सकते हैं। यह संभव नहीं है कि छात्रों की समस्या का समाधान उसी समय हो जाए, इसलिए प्रधानाचार्य और शिक्षक शिकायत का संज्ञान लेते हैं और उचित कदम उठाने पर चर्चा करते हैं।

गतिविधि विस्तार से समझने के लिए उदाहरण प्रस्तुत हैं–

पहला– एक छात्र ने पर्ची पर शिकायत लिखी कि उनके घर के पास की दुकान पर बाल मजदूरी हो रही है। इसलिए उनका सहपाठी विद्यालय न आकर, बाल मजदूरी कर रहा है। प्रधानाचार्य ने इस समस्या के बारे में विस्तार से जाना और फिर गांव के विशिष्ट व्यक्तियों, सरपंच इत्यादि की मदद से इसका निदान करने का रास्ता निकाला।

दूसरा– छात्र ने विद्यालय आने के रास्ते में हुई जलभराव की समस्या को शिकायत पेटी में पर्ची पर लिखकर डाला। प्रधानाचार्य ने समस्या का संज्ञान लिया और संबंधित विभाग से शिकायत करके, रास्ता साफ करवा दिया।

तीसरा– विद्यालय में एक 12 वर्ष की छात्रा, जो कि कक्षा 6 में पढ़ती थी कि अचानक शादी होने की जानकारी उस मोहल्ले के किसी बच्चे को मिली। बच्चों को यह पूर्व जानकारी थी कि बाल विवाह एक अपराध है, तो ये जानकारी उस पर्ची के माध्यम से शिक्षकों तक पहुंच गई। इस पर तुरंत पहल करने के लिए सोचा गया और इसे रोकना आवश्यक था क्योंकि बाल विवाह एक अपराध है। इसलिए शिक्षकों व प्रधानाध्यापक के माध्यम से गाँववालों को इस परिस्थिति के बारे में सूचित किया गया और लड़की के पिता को समझाकर बाल विवाह होने से रोक दिया गया। इस कार्य से समुदाय को भी सामाजिक कुरीतियों को खत्म करने की प्रेरणा मिली।

4. सामुदायिक अभिभावक

संक्षिप्त परिचयः अक्सर देखा गया है कि जिन बच्चों के अभिभावक कम या बिल्कुल भी शिक्षित नहीं होते, उन बच्चों को घर पर पढ़ने और अभ्यास करने में काफी परेशानी होती है। पढ़ाई में पिछड़ने के कारण उनका मन धीरे–धीरे विद्यालय से कटने लगता है और वह पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते हैं। जबकि जो अभिभावक स्वयं पढ़े लिखे होते हैं, और अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति सजग होते हैं उनके बच्चे कक्षा में बेहतर परिणाम लाते हैं। यह गतिविधि सुनिश्चित करती है कि जिन छात्रों के अभिभावक उन्हें शैक्षिक रूप से सहयोग करने में सक्षम नहीं हैं, उन छात्रों को अन्य पढ़े लिखे अभिभावक सहयोग करेंगे।

विद्यालय/कक्षा में संप्रयोगः इससे कक्षा में शैक्षिक परिणाम बेहतर होते हैं। जब अभिभावक एक–दूसरे की मदद करते हैं, तो छात्रों में एक–दूसरे की मदद करने का भाव जाग्रत होता है। विद्यालय ही नहीं, स्थानीय समुदाय में भी शैक्षिक वातावरण स्थापित होता है।

योजनाः इस गतिविधि को पूर्ण करने के लिए शिक्षक दो तरह की सूची बनाएं।

पहली– शिक्षक उन अभिभावकों की सूची तैयार करें, जो जागरूक एवं पढ़े–लिखे हैं। उसके बाद शिक्षक इन अभिभावकों से इस गतिविधि से जुड़ने का निवेदन करें। ध्यान रहे कि शिक्षक आरंभ में यह साफ कर दें, कि समूह में शामिल होने वाले अभिभावकों को किसी प्रकार का शुल्क या भुगतान नहीं किया जाए। केवल स्वेच्छा से जुड़ने वाले अभिभावक ही समूह का हिस्सा बनें।

दूसरी– शिक्षक उन छात्रों की सूची बनाएंगे जिनके अभिभावक अशिक्षित हैं । इसके बाद करीब 8–10 छात्रों के समूह बनाकर उनकी जिम्मेदारी अभिभावकों को सौंप दें।

क्रियान्वयनः

- विद्यालय अवकाश के बाद अलग– अलग अभिभावक, 8–10 छात्रों के समूह को पढ़ा सकते हैं।
- इन अभिभावकों को न सिर्फ छात्रों को पढ़ाने बल्कि उनके नियमित विद्यालय आने की जिम्मेदारी भी सौंपी जाती है। यदि उनके समूह का कोई छात्र अनुपस्थित

रहता है, तो यह उसे विद्यालय न आने का कारण जानने और उसे विद्यालय भेजने का दायित्व, निर्धारित अभिभावक का बन जाता है।

◆ अभिभावक प्रतिदिन की सामूहिक कक्षा समाप्ति पर अलगे दिन कक्षा में पढ़ाये जाना वाला विषय तय कर लेते हैं, ताकि छात्र कक्षा में तैयारी के साथ आ सकें।

ध्यान दें: शिक्षक ध्यान दें कि समूह के छात्र और उन्हें सहयोग दे रहे अभिभावक एक ही या आसपास के टोले या मोहल्ले के हों। इससे उनके बीच सामंजस्य और विश्वास स्थापित होने में मदद मिलेगी। ■